जाता है तो उत्पादक करों का अधिकांश भाग उपभोक्ताओं की ओर हस्तान्तरित कर देगा और स्वयं कम से कम भार को वहन करेगा। इसे हम निम्न चित्र से स्पष्ट कर सकते हैं —

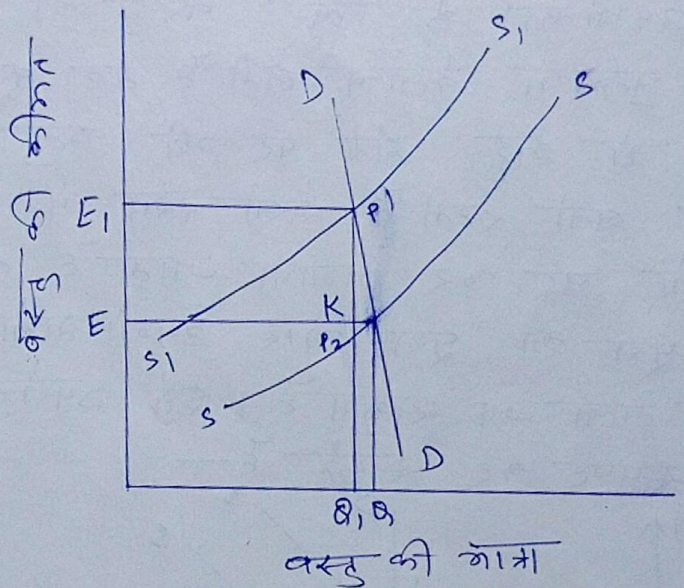

उपरोक्त चित्र में DD वैलोचदार मांग की लोच वाली वक्र रेखा है। कर लगने से पूर्व वस्तु की मांग OO के बराबर तथा वस्तु का मुल्य OE या OP के बराबर है। माना कि वस्तु पर P_2P' के बराबर कर लगाया जाता है ऐसी दशा में वस्तु का मुल्य OP से बढ़कर O_1P_1 हो जाता है और मांग OO से घटकर OO_1 हो जाती है। मांग में कमी अन्य दशाओं की अपेक्षा कम होती है। चित्र के अनुसार वस्तु पर P_2P_1 के बराबर कर लगाया गया है और इस कर की राशि में से उत्पादक KP' राशि के बराबर करों का भार को

उपभोक्ताओं की ओर विवर्तित कर देता है और P_2K के बराबर राशि का भुगतान वह स्वयं वहन करता है।

(ख) पुर्णतया बेलोच मांग

जब उपभोक्ता के लिए वस्तु की मांग की लोच पुर्णतया बेलोच होती है तब वस्तु के मुल्य में वृद्धि होने पर भी वस्तु की मांग पुर्ववत बनी रहती है ऐसी दशा में यदि वस्तुओं पर कर लगाया जाता है तो करो का पूरा का पूरा भार उपभोक्ताओं की ओर टाला जा सकता है। इसे उपरोक्त चित्र से स्पष्ट कर सकते है—

उपरोक्त चित्र में SS पूर्ति रेखा जब QD मांग की रेखा को P बिन्दु पर काटती है ऐसी दशा में वस्तु की मांग OQ के बराबर होगा। माना कि वस्तु पर PP' के बराबर कर लगाया जाता है ऐसी दशा में वस्तु का मुल्य QP से बढ़कर QP' हो जाता है। मुल्य

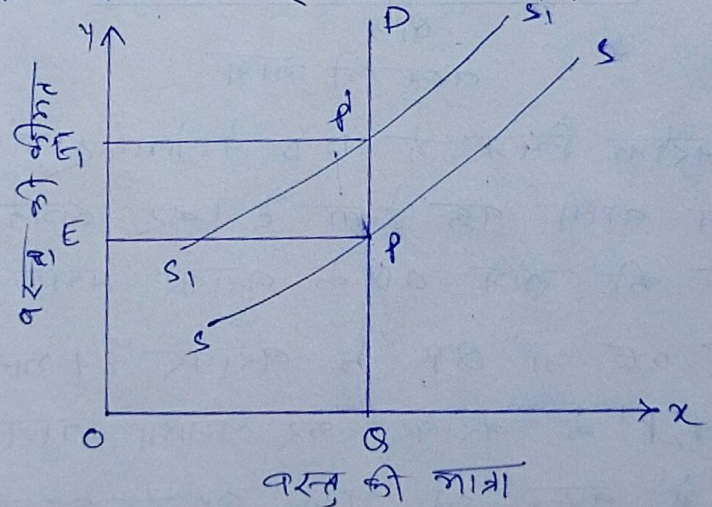

बढ़ने पर भी वस्तु की मांग पूर्ववत बनी रहती है तथा मांग एवं पूर्ति का नया संतुलन बिन्दु P से P_1 बिन्दु पर हो जाता है। इसप्रकार पूर्णतया बेलोच मांग वाली वस्तुओं पर करों का पूरा पूरा भार उपभोक्ताओं को वहन करना होता है। प्रायः इसप्रकार की मांग लोच नहीं पाई जाती है। प्रायः व्यवहार में तीन प्रकार की मांग की लोच पाई जाती है। ये हैं बेलोच, लोचदार व अधिक लोचदार मांग की लोच के आधार से जानते हैं मांग की लोच ज्यों ज्यों लोचदार होती जायेगी त्यों त्यों करों का विवर्तन उपभोक्ताओं की ओर कम होगा।

B वस्तु की पूर्ति की लोच

वस्तु की पूर्ति की लोच प्रायः समय तत्व के ऊपर निर्भर करती है। ज्यों-ज्यों समय बढ़ता जायेगा त्यों-त्यों पूर्ति की लोच लोचदार होती जायेगी। पूर्ति की लोच की विभिन्न परिस्थितियों में कर विवर्तन की परिस्थितियों का अध्ययन किस प्रकार से किया जा सकता है —

① पूर्णतया लोचदार पूर्ति

यदि किसी वस्तु की पूर्ति की लोच पूर्णतया लोचदार हो तो ऐसी दशा में करभार का विवर्तन उपभोक्ताओं के ऊपर किया जा सकता है

~~कर भार और पूर्ति लोच की~~
इसे चित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते है —

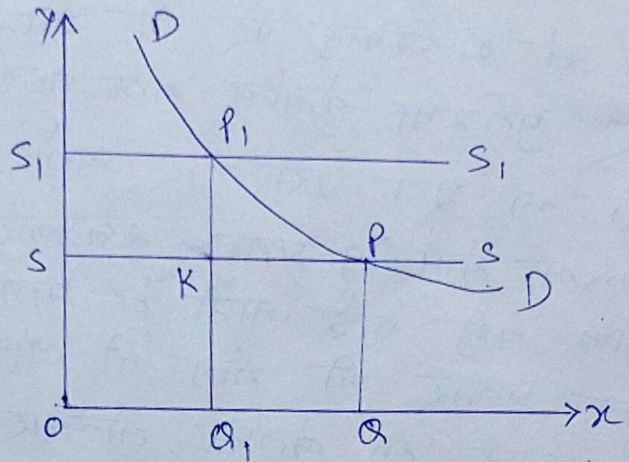

उपरोक्त चित्र में कर लगने से पूर्व पूर्ति रेखा SS है। इस रेखा पर मांग और पूर्ति का संतुलन P बिन्दु पर है तथा वस्तु की कीमत OS या OP होता है। माना कि अब KP_1 के बराबर सरकार कर लगा देती है। कर के लगने से पूर्ति रेखा S_1S_1 हो जाता है अब मांग और पूर्ति का नया संतुलन P_1 बिन्दु पर हो जाता है। इस सन्तुलन पर वस्तु की कीमत QP से बढ़कर Q_1P_1 हो जाता है। चूंकि अतिरिक्त मुल्य वृद्धि KP_1 के बराबर है और इतनी ही राशि पर कर भी लगाए गए है। इस प्रकार उत्पादक करों का सम्पूर्ण राशि का विवर्तन उपभोक्ताओं की ओर कर देता है परन्तु इस प्रकार की स्थिति व्यवहारिक नहीं हो सकती है।

(ii) <u>पूर्णतया बेलोच पूर्ति</u>

इस प्रकार की पूर्ति अति अल्पकाल में होने की कल्पना की जाती है। अतः कर का पूरा